राजेन्द्र वर्मा
जन्मतिथि- 08.11.1957
जन्मस्थान – बाराबंकी (उ.प्र.) के एक गाँव में।
पिता का नाम- स्व. संतलाल वर्मा
माता का नाम- स्व. यमुना देवी
मोबाइल नम्बर - 80096 60096

प्रियतम जब से हिय बसे, नैन स्वयं हैं बंद।
अष्टकमल काया हुई, आत्म हुआ मकरंद॥
आत्म हुआ मकरंद, अलौकिक है लौकिकता।
जाग्रति में भी प्राण, शून्य में विचरण करता॥
सुरभित-सुरभित श्वास, मधुर मधु अंतस अनुपम।
पुलकित प्राणागार, बस गए हिय में प्रियतम॥
****

अनुशासन से हैं बँधे, जग के रंग-प्रसंग।
अनुशासन हो भंग तो, पड़े रंग में भंग॥
पड़े रंग में भंग, चले फिर कैसे जीवन?
काया का भी तंत्र, चले कुछ लेकर बंधन॥
क्या पृथ्वी, क्या सूर्य, चन्द्रमा, लाखों उडुगन।
सब हों गड्डमगड्ड, अगर टूटे अनुशासन॥
****

अपना होकर भी नहीं, है अपना संसार।
गोमुख बैठा देखता, बही जा रही धार॥
बही जा रही धार, तोड़कर सारे बंधन।
जीवन है गतिमान, कह रही प्रकृति चिरंतन।
चरण लक्ष्य की ओर, फलित करता है सपना।
पथ में जो अनुकूल, वही कहलाता अपना॥
****

उद्यम-पूँजी-भूमि-श्रम, उत्पादन के अंग।
जब इनमें हो संतुलन, खिलें प्रगति के रंग।।
खिलें प्रगति के रंग, चतुर्दिक हो ख़ुशहाली।
फूला-फूला बाग़, मगन-मन विहँसे माली।।
हों सर्वांग समान, न कोई लघु न महत्तम।
मानवता के हेतु, सकल पोषित हों उद्यम।।
****

सुख के दिन दो-चार ही, पल में जाते बीत।
लेकिन दुख रहता सदा, बनकर सच्चा मीत॥
बनकर सच्चा मीत, सदा सत्पथ दिखलाता।
जीवनदर्शन-बोध, सरलता से करवाता॥
कटु यथार्थ से नित्य, माँजता है हमको दुख।
देता हमें प्रबोध, खोज लें, दुख में भी सुख॥
****

दीपमालिका है सजी, गली-गली, घर-द्वार।
रात अमावस ने किया, दुल्हन-सा सिंगार॥
दुल्हन-सा सिंगार, सभी का हृदय लुभाता।
अंतस को कर दीप्त, सकल संताप मिटाता॥
घट-घट भरे प्रकाश, दीप में जले वर्तिका।
तम का काम तमाम, कर रही दीपमालिका॥
****

दीपों की माला सजी, गली-गली, घर-द्वार।
विद्युत की लड़ियाँ जलीं, छूटे तड़ित अनार।।
छूटे तड़ित अनार, मुँडेरें जगमग करतीं।
प्रसन्नता-परिपूर्ण, रश्मियाँ अन्तस भरतीं।।
बुद्धिमान बन मनुज, हुआ जाता मतवाला।
हृद जो हुआ न दीप्त, व्यर्थ दीपों की माला।।
****

पतझर और वसंत से, प्रकृति बनी अभिराम।
जैसे शिव-ब्रह्मा करें, अपना-अपना काम॥
अपना-अपना काम, करें दोनों ही अविरल।
एक गिराए पर्ण, उगाए दूजा कोपल॥
प्रकृति नटी का रूप, बदलता रहे निरंतर।
जीवन का उल्लास, जगाने आता पतझर॥
****

द्युति राधा घन श्याम नभ, दें ऐसा आभास।
श्री के वर्षण के लिए, रचा प्रकृति ने रास॥
रचा प्रकृति ने रास, धरा आश्वस्त हो रही।
ऐसी बही बयार, कि धरती धैर्य खो रही॥
किंतु दो घड़ी बाद, हुई कुछ ऐसी संयुति।
धरती पर है छींट, गगन में चमक रही द्युति॥
****

संयम-सेवा-साधना,सदाचरण-सत्संग।
सख्य-सहज संवेदना, सकल सुमति के अंग॥
सकल सुमति के अंग, सुपोषित हो मानवता।
स्वार्थरहित सत्कर्म, सँजोए सत्य-सजगता।
धैर्य-क्षमा-अस्तेय, शौच-यम और नियम-दम।
ज्ञान-बुद्धि-अक्रोध, सधें सब, जब हो संयम॥
****